Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

प्रख्यात संगीत शिक्षाविद् प्रो. इंद्राणी चक्रवर्ती की प्रशासनिक उपलब्धियां

PROF. (DR.) GURPREET KAUR[1] & KULDEEP KAUR[2]

Former HOD & Dean Faculty, Department of Music, G.N.D.U., Amritsar
Research Scholar, Department of Music, G.N.D.U., Amritsar

सार

विश्वविद्यालयीन शिक्षण प्रणाली में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने, शिक्षा के मूल उद्देश्यों को प्राप्त करने, शिक्षकों को प्रेरणा देने तथा शिक्षा से संबंधित समस्त कार्यों का व्यवस्थित व सकुशल आयोजन करने में प्रशासक की अद्वितीय भूमिका रहती है। संगीत शिक्षा के उन्नयन में कर्मठ प्रशासकों की अहम भूमिका रही है। किसी भी व्यक्तित्व में प्रतिभासम्पन्न कलाकार और कर्मठ प्रशासक, दोनों गुणों का समन्वित होना निः संदेह एक विलक्षण गुण होता है। प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती ऐसी ही एक प्रतिभासम्पन्न तथा ओजस्वी व्यक्तित्व की स्वामिनी हैं, जिन्होंने अपने परिश्रम, कार्यदक्षता, कर्मठता से न केवल एक प्रशासक के रूप में प्रतिष्ठा अर्जित की अपितु अपनी सृजनात्मक एवं कलात्मक क्षमता के माध्यम से दूसरों के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनी। प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में विभागाध्यक्ष व डीन संकाय तथा इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ में कुलपति के तौर पर अपनी सेवाएं प्रदान की और इन शैक्षणिक संस्थाओं को उच्चतर मुकाम तक पहुंचाया।

बीज शब्द: डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती, प्रशासक, व्यक्तित्व।

शैक्षणिक प्रशासन- कला और विज्ञान दोनों हैं, 'क्योंकि इसमें कौशल के साथ-साथ वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी अपेक्षित है, ताकि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में गुणवत्ता के साथ नवीनता भी समाविष्ट हो।' शैक्षणिक प्रशासन के लिए सर्वाधिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने वाली संस्था का एक प्रशासन तंत्र होता है, जो शिक्षार्थियों के लिए सांस्कृतिक, सामाजिक, सांगीतिक नैतिक एवं आध्यात्मिक सभी प्रकार की शिक्षा की व्यवस्था करता है। प्रशासन का अंग्रेज़ी रूपांतरण है- एडमिनिस्ट्रेशन; जिसका निर्माण लैटिन भाषा के 'मिनिस्टर' शब्द से हुआ है। अर्थात वह व्यक्ति जो सदैव दूसरों के हित में कार्य करे।

"Educational Administration is a service-oriented activity through which the goals of the educational process are effectively achieved."[1]

"Educational Administration means- to channel the development of the students towards the set objectives, to use the teachers as goods and to channel the concerned messes towards the objectives and objects of their attainment, teachers as the good to use and to motivate the concerned population towards the objectives and goods of their attainment"[2]

"An Administrator is a person whose job involves helping to organize and supervise the way that an organization or institution functions"[3]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

''प्रशासन का अर्थ है-प्रकृट रूप से शासन। शासन-आज्ञा, निर्देश, आदेश आदि अर्थ के रूप में प्रयोग किया जाता है। साथ ही शासन का अर्थ शिक्षण प्रदान करना या प्रशिक्षित करना भी है। अतः प्रशासन का अर्थ केवल राज करना या आदेश देना ही नहीं, साथ-साथ शिक्षण भी अपेक्षित है।''[4]

किसी भी प्रशासक की योग्यता का मूल्यांकन उसके व्यवहार व निम्नलिखित बिंदुओं से जांचा जा सकता हैः

- अनुशासनप्रियता और परिश्रमी
- पद प्रतिष्ठा और ठोस कार्या के प्रति सजगता
- तीक्ष्ण और विवेकशील बुद्धि
- स्पष्ट एवं तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति
- आत्मविश्वासी एवं निर्भीकता
- भाषा पर पूर्ण अधिकार
- सहकर्मियों के प्रति सम्मान और सहयोग की भावना तथा उन्हें प्रोत्साहित करने का गुण

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में संगीत विभागाध्यक्ष व अधिष्ठाता के रूप में

प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती का अध्यापन कार्य 5 नवंबर सन् 1975 को कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के नए संगीत विभाग से प्रारंभ हुआ। यहाँ लगभग 6 वर्षों के सेवा काल के पश्चात आपने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में एसोसिएट प्रोफेसर के पद पर 8 सितंबर सन् 1981 को कार्यभार संभाला। सन् 1987 में मंच व दृश्य कला संकाय, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में अधिष्ठाता/प्रोफेसर के रूप में पदभार ग्रहण किया और संकाय प्रमुख पद पर भी प्रतिष्ठित हुई। विभाग के विकास कार्यों के दौरान आपको बहुत सी विघ्न-बाधाओं का भी सामना करना पड़ा, परंन्तु आत्मविश्वास, दृढ़ संकल्प, परिश्रम एवं कुशाग्र बुद्धि के बल पर वे अपने पथ पर अड़िग रही और नवीन योजनाएं क्रियान्वित करती रही। आपने विभाग में प्रशासनिक कार्यों में नियम व व्यवस्था को बनाए रखने हेतु कुछ क्रान्तिकारी एवं विकासोन्मुखी कार्य किएः

- सन् 1987 में संगीत विभाग मंच तथा दृश्य कला संकाय में रूपांतरित हुआ।
- विश्वविद्यालय से संबंधित महाविद्यालयों में स्नातक स्तर पर कत्थक नृत्य के शिक्षण की भी शुरुआत हुई।
- शिमला के कालेजों में संगीत विषय के पदों की भर्ती करवाना।

- दृश्य कला के अंतर्गत चित्र कला विभाग का प्रारंभ।
- यूजीसी द्वारा संगीत के रिफ्रेशर कोर्स का प्रायोजन।
- यूजीसी अनुदान द्वारा "सात दिवसीय कार्यशाला" का आयोजन।
- शास्त्रीय संगीत के दुर्लभ रिकॉर्ड्स और टेपों का संरक्षण करवाना।
- सन् 1995 से लगातार 21 दिवसयी रिफ्रेशर कोर्स का आयोजन।
- वर्ष सन् 1982-1997 में समय-समय पर विचार गोष्ठियों व सांगीतिक कार्यक्रमों का सफल आयोजन कर देशभर के व्यवसायिक कलाकारों, संगीतज्ञों और शास्त्रकारों को विश्वविद्यालय में आमंत्रित करना।
- संगीत वाद्यों की यथावत् मुरम्मत और अपेक्षित रख-रखाव के प्रति सजगता।
- संगीत के विद्यार्थियों और प्राध्यापकों को संगीत साधना और मंच प्रदर्शन एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी की ओर निरंतर प्रेरित करना।

इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ के कुलपति के रूप में

सन् 1997 में डा. इंद्राणी चक्रवर्ती ने इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ में कुलपति का पद ग्रहण किया और 7 वर्षों (1997-2004) तक अपनी सेवाएं प्रदान की। संयोगवश सन् 1995-96 में इंद्राणी जी को यूजीसी की विजिटिंग कमेटी के सदस्य के रूप में इसी विश्वविद्यालय का निरीक्षण करने का दायित्व मिला था। तब वहां की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं थी। आपने उस समय विश्वविद्यालय को अपने मूल्यवान सुझाव देकर उचित मार्गदर्शन किया था। आपके समय में 10वीं पंचवर्षीय योजना के अंतर्गत (21 से 23 जनवरी सन् 2003) विश्वविद्यालय का निरीक्षण हुआ तो विश्वविद्यालय के आधारभूत संरचना एवं कार्य प्रणाली की ख़ूब सराहना भी हुई। आपने इस विश्वविद्यालय को नया रूप देने के उद्देश्य से विशेष क्रान्तिकारी कार्य किए:-

- विश्वविद्यालय को संस्कृति विभाग से शिक्षा विभाग में परिवर्तित करना
- राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को बनाने के उद्देश्य से पांच दिवसीय "इंदिरा मेला" आयोजित करना
- विश्वविद्यालय की स्थापना उपरांत उसकी ज़मीन और भवनों पर प्रभुत्व प्राप्त करने का क्रान्तिकारी कार्य
- पिछले कई वर्षों से सेवानिवृत्त कर्मचारियों (शिक्षक और गैर-शिक्षक) के लिए छह मास में पेंशन लागू कराने के साथ-साथ केन्द्रीय वेतनमान लागू करवाना
- विश्वविद्यालय के लिए सरकार से 11 एकड़ ज़मीन प्राप्त करना
- बीस वर्षों के बाद दीक्षांत समारोह का सफल आयोजन
- विश्वविद्यालय की आधारभूत संरचना हेतु यूजीसी की परियोजनाओं के माध्यम से अनुदान प्राप्त करना
- विद्यार्थियों की सुविधा हेतु योगा सैंटर की स्थापना का कार्य

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

- चित्रकला विभाग का नया भवन बनाना और मूर्तिकला तथा ग्राफिक्स विभाग के भवन को नया रुप देना
- संगीतशास्त्र में स्नातकोत्तर और एम.फिल. कोर्स की शुरुआत
- विभाग की लाइब्रेरी का विस्तार एवं नए उपकरणों की व्यवस्था
- कंप्यूटर सैंटर व स्टूडियो का निर्माण
- यूजीसी अनुदान के सौजन्य से 'घराना परंपरा' पर राष्ट्रीय परिसंवाद
- नागपुर विश्वविद्यालय के एकेडमिक स्टाफ कालेज के सहयोग से सांप्रदायिक सद्भाव तथा राष्ट्रीय एकता पर 'त्रि-दिवसीय कार्यशाला' का आयोजन करवाना
- विज़ुअल आर्ट्स विभाग बिल्डिंग, एमफीथिएटर, गेस्ट हाउस, वाइस चांसलर लाज, गर्ल्स हॉस्टल का निर्माण
- नृत्य प्रशिक्षण शिविर, नाटय कार्यशाला तथा राष्ट्रीय पुस्तक मेला का आयोजन करना

सत्य साई मीरपूरी कालेज आफ म्युज़िक की प्रिंसिपल के रूप में

जून सन् 2008 में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला से सेवा निवृत होने के पश्चात् सदगुरू श्री सत्य साई बाबा के जन्मदिन पर बाबा द्वारा आग्रह करने पर आपने उनके द्वारा स्थापित 'सत्य साई मीरपूरी कालेज आफ म्युज़िक' की प्रिंसिपल के रूप में सेवा का दायित्व उठाया और अपने निरंतर प्रयत्नों से इस संस्था को एक नई पहचान दी। ''पहले संगीत में केवल डिप्लोमा कोर्स ही था और उन्होंने सर्वप्रथम लगभग चार-पांच वर्षों के कार्यकाल में अपने प्रयासों द्वारा डिस्कशन कर बैचुलर की डिग्री कोर्स, जो 4 साल का है, बी.पी.ए. (बैचलर ऑफ परफॉर्मिंग आटर्स) को 2007 में शुरू करवाया। यह उनका बहुत बड़ा योगदान है। बहुत सी बातें हैं जो उनके कार्यकाल के दौरान हुई। काफी सारे प्रोग्राम वगैरह जो पहले नहीं होते थे, वे भी साल में चार-पांच बार आयोजित होने लगे। पूरे टीचर्स और स्टाफ मिलकर आश्रम के अंदर सत्य साई बाबा के समक्ष करते थे। उनके कार्यकाल के दौरान विजिटिंग प्रतिष्ठित कलाकार भी आमन्त्रित किए गए। जैसे पंडित जसराज, पंडित राजन मिश्र-पंडित साजन मिश्र, बालमुरली कृष्ण, मृदंग वादक उमलयपूरम, विदूषी सुमित्रा गुहा (दिल्ली), दीपाली चंद्रा (दिल्ली), तृप्ति वाटवे, रंजनी रामचंद्र और टी.वी. गोपाल कृष्ण। रेगुलर बेसिस पर वर्कशॉपस का भी आयोजन करवाया। इसके अतिरिक्त 2015 में जब वे प्रिंसिपल थी, तब इन्होंने संगीत पर एक एग्जीब्यूशन ''म्यूजिक एंड आर्ट'' पर आयोजित किया था तथा भारत रत्न प्राप्त करने वाली कर्नाटक की श्रीमती एम. एस. सुब्बलक्ष्मी की जन्मशती का आयोजन कालेज में किया था।''[5]

प्रो. (डा.) इंद्राणी चक्रवर्ती की प्रशासनिक विलक्षणताएं

अनुशासनप्रियता और परिश्रमी

प्रशासन और अनुशासन परस्पर अभिन्न हैं। प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती का बाल्यकाल पिता के कठोर अनुशासन में व्यतीत हुआ और डा. प्रेमलता शर्मा, डा. लालमणि मिश्र, पं. देबू चैधुरी जैसे कर्मठ अनुशासनप्रिय गुरुजनों के सान्निध्य में पल्लवित हुआ, जो एक सफल प्रशासक बनने में सहायक सिद्ध हुआ। आपने विद्यार्थियों और कर्मचारियों को कार्य के प्रति अनुशासित और सत्यनिष्ठा की प्रेरणा दी। परिश्रमी, समय के पाबंद, अनुशासित व कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारियों से आप हृदय से प्रेम करती हैं। हर प्रकार के काम में आपको पूर्णता पसंद है।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

पद प्रतिष्ठा और ठोस कार्यों के प्रति सजगता

प्रो. इंद्राणी चक्रवर्ती के स्वभाव में ही अड़िगता है। वे अपने कार्यों के प्रति पूर्ण निष्ठावान है। "मैंने कम से कम 7-8 वीसी के कार्य करने की पद्धति को निकट से देखा है। वह सभी रूटीन वर्क पर कार्य करते थे। कोई बड़ी योजना नहीं बनाते थे और रूटीन वर्क का कार्य भी इस तरह से होता था; क्लास समय से लेना चाहिए, ऑफिस ठीक से चलना चाहिए, यह तमाम चीजें होती रहती थी। किंतु मैडम के आने के बाद विश्वविद्यालय का सही रूप सामने आया। सही रूप मैं इसलिए कह रहा हूं, चूँकि विश्वविद्यालय का अर्थ केवल क्लास मात्र लेना नहीं बल्कि उसके लिए अच्छी व्यवस्था की योजना बनाना, विश्वविद्यालय को आगे बढ़ाने के लिए योजनाओं पर कार्य करना, निरंतर विश्वविद्यालय को विकसित करना और उसकी गरिमा और गौरव को आगे बढ़ाने का प्रयत्न करना, तो यह तमाम कार्य मैडम के आने के बाद शुरू हुए। एक कलाकार जब प्रशासनिक पद पर बैठता है तो प्रशासन को अच्छे ढंग से चलाने के लिए बड़े सख्त निर्णय भी लेने पड़ते हैं। उस दौर में इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय में कुलपति की चेयर पर बैठकर उन्होंने जो कार्य किए, उसके लिए आज भी विश्वविद्यालय उनको स्मरण करता है और लगातार उनके द्वारा शुरू किए कार्यों को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहा है।"[6]

"The post was full of challenges. She completed successfully to consecutive terms (1997-2000 & 2000-2003) as the most popular vice chancellor of I.K.S. University. She had launched and completed many important projects to raise the status of I.K.S. University during her tenure. She made a revolution in the field of Art & Culture by organizing a 5 day long "Indira Mela" in 1997 in which many well known classical as well as folk artists showcased their art. She revived the University convocation after a gap of twenty years. University Auditorium, University Guest House, Vice Chancellor Lodge, Lalit Kala Bhawan for the department of Visual Arts, Sculpture studio, Girls Hostel was constructed to uplift the infrastructure of the University. The University Library was empowered with the latest technology, Reference and Rare Book Sections were enriched with authentic books, journals and rare menu-scriptures. She had successfully initiated a serious work culture in its academic and administrative wings. The Registration of eleven acres of land in the name of the university, which was kept pending many years was done in her time. She had to face challenges also while pursuing her work. But she sorted out everything with courage and patience."[7]

तीक्ष्ण और विवेकशील बुद्धि

आप तीक्ष्ण बुद्धि व विवेकशीलता की धनी हैं। सही निर्णय लेने का गुण उन्हें दूसरों से अलगाता है। प्रशासन काल में विभागों के पुनर्गठन करने के लिए आपके सामने कई विघ्न-बाधाएँ आई, किन्तु इन्होंने अपने संकल्प को नहीं छोड़ा। वरिष्ठ अधिकारियों, मंत्रियों से पूरे सम्मान, समझ और सूझ-बूझ से कार्य करवाने का हुनर भी उनमें है। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय में आए दिन विभाग को विस्तृत करने की चुनौती आपके सामने थी, इन्होंने मुख्य मंत्री, शिक्षा मंत्री, शिक्षा व संस्कृति सचिव, संबंधित मंत्रालय के उपसचिव तथा अन्यों के सहयोग से अपने दायित्वों के निर्वहन में सफलता पाई।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

आपने अपना कार्यकाल चार राज्यपाल (विश्वविद्यालय के कुलाधिपति) की छत्रछाया में सुसंपन्न किया, जो अपने आप में एक मिसाल है।

''हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के नए विभाग में बहुत संघर्ष किया, क्योंकि वह एक सरकारी विश्वविद्यालय था तो सेक्रेटरी से मिलना, उनसे बात करना होता रहता था। तो उन्होंने भी काफी सहयोग किए। धीरे-धीरे एम.फिल. पीएच.डी. शुरू किया तो फिर लोगों को लगा कि यह डिपार्टमेंट अब तैयार हो रहा है और यह काफी मेहनत कर रही है। उसी समय यूजीसी की टीम आई और वीसी ने बोला कि आपको पूरा फ्लोर दे देंगे। इसी खुशी में मैं और मेहनत करने लगी। विभाग को फैकल्टी बना दिया। क्लास लेना, सेमिनार में जाना, पेपर लिखना व पब्लिश करना, अपना अभ्यास करना ये सब कुछ भी साथ-साथ ही चलता रहा।''[8] "हम झांसी की रानी के बारे में सुनते थे, लेकिन मैंने देखा कि कैसे कार्य किया होगा झांसी की रानी ने, उसी ढंग से इन्होंने कार्य किया और इतना बुद्धिमान वाइस चांसलर मैंने कभी नहीं देखा। देखने में ऐसा लगता था कि आप बहुत बड़े संगीतकार हैं, लेकिन बहुत ही डिप्लोमेटिक और ज़रूरत पड़ने पर बहुत ही पॉलिटिकल और किसी से कैसे कार्य करवाना है तो यह एक अच्छे एडमिनिस्ट्रेटर की सबसे अच्छी बात होती है।"[9] डा. इंद्राणी चक्रवर्ती में प्रशासनिक योजनाएं बनाने की विलक्षण सूझ-बूझ है। यही कारण है कि वे यूजीसी तथा नैक की कई वर्षों तक सक्षम सदस्य रहीं हैं।

स्पष्ट एवं तर्कपूर्ण अभिव्यक्ति

जिस समय आप विभाग में आई, उस समय प्रस्तुत विभाग बहुत मुश्किलों से गुज़र रहा था। यहां तक कि उसे बंद कराने के निर्देश भी दिए गए थे। डॉ. चक्रवर्ती को यह स्वीकार नहीं था। उन्होंने यूजीसी कमेटी के इस निर्देश को अस्वीकार करते हुए कहा कि 'घर को बनाने में अधिक समय लगता है और उसे ढ़ाहने में बहुत कम' उनकी इस सोच और विश्वास ने डिपार्टमेंट को इस लायक बनाया कि कमेटी के दूसरे निरीक्षण में डिपार्टमेंट की प्रगति देखने लायक थी।

"She is an eminent musician reputed teacher and successful administrator. She has reshaped the small music Deptt. to the tune of performing and visual Arts. She has the honour of serve a Music University for more than two terms, which is rare events in one's life. I have also seen her in the meeting of HPU- Executive council and appreciate her impartial and broad views."[10]

आत्मविश्वासी एवं निर्भीकता

डॉ. इंद्राणी ने कभी किसी से घबराकर अपने संकल्प से पीछे हटना नहीं सीखा। आपकी विश्वविद्यालय और विभाग के कार्यों को पूरा करवाने की क्षमता एवं दृढ़ता सराहनीय है। आप उच्च कोटि की कलाकार भी हैं, लेकिन उच्च अधिकारियों के रूप में आपकी पहचान वास्तव में अद्वितीय है। निर्भीकता के साथ आपकी स्पष्टवादिता और सहकर्मियों से कार्य करवाने की दक्षता, सीखने वालों के लिए किसी पाठ से कम नहीं।

भाषा पर पूर्ण अधिकार

किसी भी प्रशासक के लिए वाकप्टुता का गुण होना अत्यंत आवश्यक होता है। भाषा पर उसका अधिकार उसके महत्व को दुगुना कर देता है। डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती इस कसौटी पर भी खरी उतरती हैं। भाषा पर इनकी पकड़ बहुत अच्छी है। केवल हिंदी और अंग्रेज़ी ही नहीं अपितु संस्कृत और बांग्ला से भी पूर्ण परिचित है। इनकी सशक्त लेखनी का अंदाज़ा इस

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

बात से लगाया जा सकता है कि जब भी अपने विभाग या विश्वविद्यालय की किसी समस्या को लेकर इन्होंने पत्र लिखकर संबंधित विभाग या अधिकारी को भेजा तो कभी भी इनका प्रस्ताव अस्वीकृत नहीं हुआ।

सहकर्मियों के प्रति सम्मान और सहयोग की भावना तथा उन्हें प्रोत्साहित करने का गुण

अपने सहयोगियों की प्रतिभा व कार्यकौशलता को पहचान कर उन्हें ज़िम्मेदारी देना और साथ ही उस कार्य के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना, इन्हें भलि भांति आता है। "वर्ष 1981 में प्रो. इंद्राणी चक्रवर्ती जी का रीडर के रूप में आगमन ना केवल मेरे लिए अपितु वर्तमान में हि० प्र० के अधिकांश शिक्षण संस्थानों में कार्यरत संगीत शिक्षकों के लिए वरदान सिद्ध हुआ। संगीत से जुड़ा अपना विभागाध्यक्ष बनने से विभाग को विस्तार प्रदान करने के सभी मार्ग प्रशस्त हुए। यद्यपि विभाग में पहले से कार्यरत शिक्षक विद्वान एवं अच्छे विचारक थे, परंतु पद के नियमानुसार पदोन्नति के मार्ग में उनकी अकादमिक योग्यता आड़े आ रही थी। मैडम ने विभाग में कार्यरत शिक्षकों को नियमों में ढील प्रदान कर एम० फिल० करवाने का दायित्व सौंपा तथा अपने मार्गदर्शन में विभाग के युवा, कर्मठ, शिक्षक प्रो० चमन वर्मा जी को पी० एच० डी० करवा कर एक ऐसी सशक्त टीम का गठन किया, जिससे विभाग की आगामी प्रगति के समस्त मार्ग स्वतः खुल गए।"[11] डॉ. इंद्राणी जी में सबसे बड़ी खासियत अपनेपन और प्रेम भावना की है। जो व्यक्ति सही का अनुसरण नहीं करता, उसको आत्मीयता से समझाना ही इनका स्वभाव रहा है। इतना ही नहीं, एक सफल प्रशासक का परिचय देते हुए इन्होंने अपने सहकर्मियों की राय को कभी अनदेखा नहीं किया अपितु सदैव उनके विचारों को महत्वपूर्ण माना है।

यही कारण है कि अपने पद का कर्तव्य इन्होंने बड़ी सहजता, नैतिकता और ईमानदारी से निभाया। इनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन केवल प्रशासनिक कार्यों में ही नहीं बल्कि सांगीतिक सम्मेलनों, गोष्ठियों, मंच प्रदर्शन के लिए भी रहा है। "सिद्धांत चेतना को विकसित करता है और आपकी चेतना जब विकसित होती है तो कला के प्रायोगिक पक्ष में नयापन आना शुरू होता है। मैडम ने सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक दोनों पक्षों को सामान्य रूप से विकसित करने की कोशिश की है। जब भी प्रोफेसेस की मीटिंग होती थी तो वे कहा करती थी कि अपने सैद्धांतिक पक्ष को मज़बूत कीजिए और सिद्धांत को प्रयोग में किस तरह लाया जाता है, उसको प्रयोग पक्ष के माध्यम से बतलाइए।"[12] आपने अपने सहकर्मियों को सदैव आगे बढ़ने और क्षेत्र विशेष में कुछ नवीन करने व सीखने के लिए प्रोत्साहित किया है।

कला एवं प्रशासन का उचित सामंजस्य

डॉ. इंद्राणी चक्रवर्ती ने 'ए ग्रेड' श्रेणी की उत्कृष्ट कलाकार होने के साथ-साथ प्रशासनिक गतिविधियों को सकुशलता से निभाया। ''24 घंटे तो सबके लिए होते हैं। समय की सैटिंग करना अपने पर निर्भर करता है। मैंने कभी समय को व्यर्थ नहीं जाने दिया, क्योंकि मुझे पता था कि कम समय में अधिक कार्य करने हैं। हालांकि फंकशन वगैरह में भी बहुत भाग लेती थी। हम अपने समय को मैथेमेटिकस के ज़रिए एडेजस्ट कर सकते हैं। इस तरह मैंने कला और प्रशासन में तालमेल बनाया।''[13]

अन्य प्रशासनिक गतिविधियां

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के उच्च स्तरीय पैनल की सदस्यता

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग वह आयोग है, जिसके अंतर्गत विभिन्न समितियों द्वारा विश्वविद्यालयों का निरीक्षण कर उन्हें प्रोत्साहन व सहायता देने के लिए अनुदान प्रदान किया जाता है। प्रो. इंद्राणी चक्रवर्ती इस आयोग की कई समितियों से संबंधित है, जिसका उल्लेख निम्नलिखित है:

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

- यू.जी.सी. पंचवर्षीय परियोजना के अंतर्गत SNDT University (Mumbai), Ahmedabad University (Ahmedabad), Madurai Kamaraj University (Madhurai), Kerala University (Kerala) इत्यादि विश्वविद्यालय में निरीक्षण करने हेतु दौरा किया तथा अपने अमूल्य सुझाव दिए।
- यू.जी.सी. की विजिटिंग कमेटी की नौवीं और दसवीं परियोजना की सदस्य भी रहीं और कई विश्वविद्यालयों में निरीक्षण हेतु दौरा किया।
- यू.जी.सी. द्वारा कई विश्वविद्यालयों के विभागों की सलाहकार समिति की सदस्य के रूप में नामांकित किया गया।
- यू.जी.सी. द्वारा सब्जेक्ट पेनल सदस्य के रूप में नामांकित किया गया।
- UGC EMERITUS FELLOW-2009
- वर्ष सन् 1994 में प्रस्तुत आयोग की मेजर रिसर्च फेलोशिप की प्राप्ति।
- यू.जी.सी. से ग्रांट प्राप्त कर हिमाचल प्रदेश के हिमालयन स्ट्डीज केन्द्र प्रदत्त शोध परियोजना "शिव-प्रत्यय-हिमाचल-प्रदेश के विशेष संदर्भ में" वर्ष 2004 में शोध कार्य पूर्ण किया।

राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद (NAAC)

प्रो. इंद्राणी चक्रवर्ती राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद की सदस्य भी रह चुकी हैं। इस पद का दायित्व निभाते हुए आपने जिन विश्वविद्यालयों का निरीक्षण किया, उनमें से ए.पी.जे. कॉलेज आफ फाइन आर्ट्स जालंधर पंजाब, हंसराज महाविद्यालय जालंधर पंजाब, आर. आर. बाबा महिला महाविद्यालय बटाला पंजाब, जे.एल.एन. राजकीय कन्या महाविद्यालय मंडी गोविंदगढ़ पंजाब, पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला पंजाब, रविन्द्र भारती विश्वविद्यालय कलकत्ता, सावित्रीबाई फूले महिला महाविद्यालय महाराष्ट्र, एम.एस. विश्वविद्यालय बड़ोदा, चित्रकला परिषद् बैंगलोर, शंकरचार्य विश्वविद्यालय कालडी, पी.जी.एम संगीत महाविद्यालय गडग कर्नाटक इत्यादि नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रो. इंद्राणी 40 वर्ष तक प्रशासनिक क्षेत्र में रहीं। इतना ही नहीं आपने कई विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक कार्यों के साथ-साथ UGC/NET, NAAC, UPSC, SPSC की सद्स्या/अध्यक्ष के रूप में भी काम किया है जो अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसके अतिरिक्त विजिटिंग प्रोफेसर, अलग-अलग समितियों में रिसोर्स पर्सन, कई संस्थानों में नैक टीम की चेयरपर्सन की भूमिका भी निभाई है।

निष्कर्ष

डा. इन्द्राणी चक्रवर्ती ने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला में संगीत संकाय की अधिष्ठाता, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़ की कुलपति एवं सत्य साई मीरपूरी कालेज आफ म्युज़िक की प्रिंसिपल इत्यादि सभी पदों पर कुशल प्रशासन का परिचय देते हुए संस्था के चहुंमुखी विकास हेतु यथासंभव प्रयास किए और आवश्यक्तानुसार कुछ कठोर निर्णय लेकर उन्हें क्रियान्वित किया। अपनी कर्मठता, कर्तव्यनिष्ठा, मूल्यवादिता एवं स्पष्टवादिता जैसे गुणों के कारण नए मापदण्ड स्थापित किए। डॉ. इन्द्राणी चक्रवर्ती का कलाकार रूप यद्यपि सौम्यता को परिभाषित करता हो,

किंतु उनका प्रशासनिक व्यवहार उनके व्यक्तित्व के 'तेज़' को प्रतिपादित करता है, जो भविष्य में आने वाली पीढ़ियों को निःसंदेह प्रोत्साहित करेगा तथा ज्ञान की नई दृष्टियों का संचार करेगा।

संदर्भ:

1. https://gkinupsc.com/2021/07/31/definition-of-administration/
2. https://gkinupsc.com/2021/07/31/definition-of-administration/
3. https://www.collinsdictionary.com/dictionary/english/administrator
4. कौर डॉ. गुरप्रीत, भारतीय संगीत के अनमोल मणि डा. लालमणि मिश्र, पृष्ठ सं. 130
5. श्री साईराम से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना, दिनांक- 01.07.2021
6. डॉ. गोरे लाल चंदेल से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना, दिनांक- 06.04.2021
7. Prof. Beenapani Mahto, Abhinandan Granth, Page No.- 18
8. प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना, दिनांक- 01.02.2021
9. https://www.facebook.com/musicdeptpu.chd.7/videos/326531232406652/?sfnsn=wiwspmo
10. Shri Suresh Bhardwaj, Abhinandan Granth, Page No.- 4
11. डॉ. परमानंद बंसल से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना, दिनांक- 04.03.2021
12. डॉ. गोरे लाल चंदेल से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना, दिनांक- 06.04.2021
13. प्रो. (डॉ.) इंद्राणी चक्रवर्ती से की गई फोनवार्ता से प्राप्त सूचना, दिनांक- 23.09.2021